डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 09/06/2021 Page No.:

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
काव्य- कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या -

तथाहि - इयं संवर्द्धनवारिधारा तृष्णा विषवल्लीनाम्। व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम्। परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्। विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्। निवासजीर्णवलभी धनमदपिशाचिकानाम्। तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्।

अर्थ -

(तथाहि - इयं संवर्द्धनवारिधारा तृष्णा विषवल्लीनाम्) क्योंकि यह लक्ष्मी तृष्णारूपी विषलताओं को बढ़ाने वाली जलधारा है। (व्याधगीतिरिन्द्रिय-मृगाणाम्) इन्द्रियरूपी हरिणों को लुभाने के लिए शिकारी का गीत है। (परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्) सत्कार्यों रूपी चित्रों को ढक लेने वाली धूम पंक्ति है। (विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्) मोहरूपी दीर्घ निद्रा के लिए विलास शय्या है। (निवासजीर्णवलभी धनमदपिशाचिकानाम्) ऐश्वर्यमदरूपी पिशाचिनियों के निवास के लिए जीर्ण अटारी है। (तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्) शास्त्ररूप चक्षुओं के लिए तिमिरनामक रोग की उत्पत्ति है।

टिप्पणी -

जैसे जलधारा विषलताओं का पोषण करती है, वैसे लक्ष्मी विषभोगेच्छा को बढ़ाती है। अनर्थ का कारण होने से तृष्णा व विषयकामना

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." -Mahatma Gandhi

IND CamScanner App

विषलता ही है। यहाँ तृष्णा में विषवल्ली का आरोप लक्ष्मी में जलधारा के आरोप का निमित्त है, अतः 'परम्परितरूपक' अलंकार है।

जैसे व्याध का गीत हरिणों को आकर्षित करता है, वैसे लक्ष्मी इन्द्रियों को आकर्षित करती है। अतः कवि ने इन्द्रियों में मृगों का आरोप किया है, जो लक्ष्मी में 'व्याधगीति' के आरोप का कारण बना। इसप्रकार यहाँ भी 'परम्परितरूपक' अलंकार है।

जैसे धूएँ से चित्र मिट जाते हैं, वैसे लक्ष्मी सच्चरित्र को मिटा देती है। इस प्रकार यहाँ सच्चरित में चित्रों का तथा लक्ष्मी में धूमलेखा का आरोप किया गया है तथा प्रथम आरोप द्वितीय आरोप का निमित्त है, अतः 'परम्परितरूपक' अलंकार है।

जैसे विलास-शय्या पर खूब नींद आती है, वैसे ही लक्ष्मी मोह की विलास-शय्या है अर्थात् लक्ष्मी की विद्यमानता में मोह बढ़ जाता है और चिरकाल तक चलता है। दीर्घनिद्रा में व्यक्ति को चिरकाल तक कुछ सुधबुध नहीं रहती। मोह में भी कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक समाप्त हो जाता है।

जैसे पिशाचिनियाँ टूटी फूटी अटारी में ही अपना अड्डा जमाती हैं, उसी प्रकार ऐश्वर्य का अभिमान भी लक्ष्मी में ही निवास करता है। 'बालबोधिनी' (पृ०173) में कहा गया है कि मोह में होने वाले विकारों की अपेक्षा से 'निद्राणाम्' में बहुवचन का प्रयोग किया गया है।

जैसे तिमिर नामक रोग में दृष्टि नहीं रहती, वैसे ही लक्ष्मी से शास्त्ररूपी दृष्टि विफल हो जाती है क्योंकि लक्ष्मी से शास्त्रदृष्टि में व्याघात आ जाता है। अतः

"You have to take the calculated risk, to earn something." –Dhirubhani Ambani

IND CamScanner App

शास्त्र में दृष्टि का आरोप किया गया है जोकि लक्ष्मी में तिमिर के आरोप का निमित्त बना, अतः यहाँ 'परम्परितरूपक' अलंकार है।

पदव्याख्या– संवर्धनवारिधारा = वारीणां धारा वारिधारा (ष० तत्पु०), संवर्धनाय वारिधारा (च० तत्पु०)। तृष्णाविषवल्लीनाम् = विषस्य वल्ल्यः विषवल्ल्यः (षष्ठी तत्पु०) तृष्णा एव विषवल्ल्यः तृष्णाविषवल्ल्यः (क० धा०) तासाम्। व्याधगीतिः = व्याधस्य गीतिः (ष० तत्पु०)। इन्द्रियमृगाणाम् = इन्द्रियाण्येव मृगाः इन्द्रियमृगाः (क० धा०) तेषाम्। परामर्शधूमलेखा = धूमस्य लेखा धूमलेखा (ष० तत्पु०) परामर्शाय धूमलेखा परामर्शधूमलेखा (च० तत्पु०) (परामर्शः = परामृश्यते अनेन परा + मृश् + घञ्। सच्चरितचित्राणाम् = सतां चरितानि सच्चरितानि (ष० तत्पु०) सच्चरितान्येव चित्राणि सच्चरितचित्राणि (क० धा०) तेषाम्। विभ्रमशय्या– विभ्रमाय शय्या (च० तत्पु०)। मोहदीर्घनिद्राणाम् = मोहा एव दीर्घनिद्राः मोहदीर्घनिद्राः (क० धा०) तासाम्। निवासजीर्णवलभी = जीर्णा चासौ वलभी जीर्णवलभी (क० धा०) निवासाय जीर्णवलभी (च० तत्पु०)। धनमद-पिशाचिकानाम् = धनानां मदाः धनमदाः (ष० तत्पु०) धनमदा एव पिशाचिकाः धनमदपिशाचिकाः (क० धा०) तासाम्, पिशाचिका = पिशितं मांसम् अश्नाति (पिशित + अश् + अण्) पृषोदरादीनि०, 'शित्' का लोप तथा 'अश्' को 'शाच्' आदेश – पिशाच + ङीष् (ह्रस्व) + कन् + टाप्। तिमिरोद्गतिः = तिमिरस्य उद्गतिः, उद् + गम् + क्तिन् प्र० ए०। शास्त्रदृष्टीनाम् – शास्त्राण्येव दृष्टयः शास्त्रदृष्टयः (क० धा०) तासाम्॥ इति॥

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." –Mahatma Gandhi

IND CamScanner App